पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 01.06.2016 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868002130

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 38वें स्थापना दिवस

3 जून 2016 की

आप सब को

हार्दिक बधाई

वर्ष-32 अंक-23 ज्येष्ठ-2073 दयानन्दाब्द 192 01 जून से 15 जून 2016 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.06.2016, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस तपोवन आश्रम, देहरादून में सोल्लास सम्पन्न

आर्य सभाओं की एकता के लिये आम आर्य जन आगे आयें-**डा. देवव्रत आचार्य (राज्यपाल हिमाचल)**

स्वामी चितेश्वरानन्द जी का सम्मान करते डा.देवव्रत आचार्य जी,साथ में प्रधान दर्शन अग्निहोत्री,मन्त्री प्रेमप्रकाश शर्मा व परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य। द्वितीय चित्र–डा. अनिल आर्य का अभिनन्दन करते डा.देवव्रत आचार्य जी,दर्शन अग्निहोत्री व प्रेमप्रकाश शर्मा।

रविवार, 15 मई 2016, वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी का उत्सव व अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट के तत्वावधान में मूर्धन्य आर्य संन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी का 13 वां स्मृति दिवस आर्य नेता श्री दर्शन अग्निहोत्री की अध्यक्षता में सोल्लास मनाया गया। हिमाचल के राज्यपाल डा.देवव्रत आचार्य ने वर्तमान समय में आर्य समाज की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए आम आर्य जनों को एकता के लिये प्रयास करने को कहा,उन्होंने कहा कि आज आर्य समाज की पहले से अधिक आवश्यकता है।

मन्त्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा ने कुशलता से सभी व्यवस्था सम्भाली व डा. अनिल आर्य के नेतृत्व में परिषद् के आर्य युवको ने समारोह में चार चांद लगा दिए। साहित्यकार सुनीता बुद्विराजा ने संचालन किया। दिल्ली से भी लगभग 200 आर्य जन समारोह में सम्मिलित हुए।

स्वामी दिव्यानन्द जी,आचार्य आशीष जी, पं.सत्यपाल पथिक, श्री कर्मठ, श्री राजेन्द्र काचरू आदि के उद्बोधन हुए।

चौ. लाजपतराय आर्य, श्रद्धानन्द शर्मा व आचार्य अन्नपूर्णा का अभिनन्दन

अभिनन्दनः महामहिम राज्यपाल डा.देव्रवत आचार्य द्वारा–कमशः–आचार्या अन्नपूर्णा जी(देहरादून),श्रद्धानन्द शर्मा(गाजियाबाद) व चौ.लाजपतराय आर्य(करनाल) के अभिनन्दन का सुन्दर द्रश्य । द्वितीय चित्र में 10 बच्चों को टेबलेट वितरित किये गये।

भारत के कौने कौने से तपोवन पंहुचे आर्य जनों का हुआ भव्य समागम

आचार्य अन्नपूर्णा का अभिनन्दन करते डा.देव्रवत आचार्य जी साथ में श्री बिरेश रहेजा आदि। दायें आर्य जनों की शानदार उपस्थिति का सुन्दर द्रश्य।

दानी महानुभावों से अपील

यदि आप केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों से सन्तुष्ट हैं तो हमें सहयोग करें,कृपया अपना सहयोग परिषद् के खाता सं. 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई.एफ.एस.कोड -SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868002130 पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित — डा. अनिल आर्य, मो.09810117464

राष्ट्र-चिंतन

वीर सावरकर की जयंती 28 मई पर विशेष

इतिहास के सर्वाधिक उपेक्षित योद्धा ''वीर सावरकर''

– विष्णुगुप्त

भारतीय आजादी के आंदोलन के इतिहास को अगर आप खंगालेंगे और स्वतंत्र विश्लेषण करेंगे तो निश्चित तौर पर वीर विनायक दामोदर सावरकर एक अतुलनीय नायक के तौर पर सामने आते हैं। वीर सावरकर एक ऐसे नायक थे जिन्होंने न केवल खुद यातनाएं झेली बल्कि उनके पूरे परिवार ने भी यातनाएं झेली थी। उनकी आजादी की दिवानगी सिर्फ देश के अंदर ही नहीं, बल्कि विदेशों तक गूंजी थी। ब्रिटेन से लेकर फ्रांस तक और अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय तक गुजी थी। वीर विनायक दामोदर सावरकर परतंत्र भारत के पहले व्यक्ति थे जिन पर अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में मुकदमा चला था। यद्यपि वीर सावरकर अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में मुकदमा हार गये थे और उपनिवेशकारी, परतंत्रता को हथकंडा बना कर प्राकृतिक संसाधनों को लुटने वाले, गैर ईसाइयत की संस्कृति को लहूलुहान करने वाले, गैर ईसाइयत की संस्कृति को जमींदोज करने वाले अंग्रेजों की जीत हुई थी। आखिर क्यों? इसलिए कि भारत एक परतंत्र राष्ट्र था। वीर सावरकर के लिए कोई दमदार वकील मुकदमा नहीं लड़ा था और उस समय की विश्व व्यवस्था पर ब्रिटेन की पकड़ और चौधराहट भी उल्लेखनीय थी। ब्रिटेन की इसी चौधराहट और उपनिवेशवादी हथकंडे के खिलाफ हिटलरशाही पनपी थी और दुनिया ने इसकी परिणिति दूसरे विश्वयुद्ध के तौर पर देखी–झेली थी। यह भी सही है कि हमारी आजादी , जो सुनिश्चित हुई थी, वह सिर्फ गांधी के अहिंसावाद से नहीं मिली थी बल्कि हिटलरशाही से उत्पन्न दूसरे विश्वयुद्ध का भी उसमें महत्वपूर्ण योगदान था। दूसरे विश्वयुद्ध में ब्रिटेन आर्थिक–सामरिक ही नहीं बल्कि कूटनीतिक तौर पर भी कमजोर हो गया था। दूसरे विश्वयुद्ध का विजेता अमेरिका ने ब्रिटेन को भारत सहित अन्य देशों से भी उपनिवेशवाद का साम्राज्य समाप्त करने का निर्णायक फैसला सुना दिया था।

वीर सावरकर जब एक अतुलनीय नायक थे तब उन्हें इतिहास में पर्याप्त जगह क्यों नही मिली? महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस, सरदार भगत सिंह और सरकार पटेल की तरह वीर सावरकर को आजादी के इतिहास के पन्नों पर जगह क्यों नहीं मिली? अब तक की सरकारों ने इतिहासकारों की गलतियों को सुधारने की कोशिशें क्यों नहीं की? वीर सावरकर के योगदानों को लेकर नये सिरे से इतिहास लेखन को सुनिश्चित क्यों नहीं किया गया? वीर सावरकर की यातना भूमि सेलुलर जेल को तीर्थस्थल में बदलने की कोशिशें क्यों नहीं हुई? वीर सावरकर को लेकर वामपंथी जमातों और तथाकथित धर्मनिरपेक्ष दलों में रही दुर्भावनाओं के पीछे कारण क्या हैं? क्या सही में वीर सावरकर पहले जवाहर लाल नेहरू की तुष्टिकरण की नीति के शिकार हुए और उसके बाद तथाकथित धर्मनिरपेक्ष दलों की परसुप्रभुत्ता के प्रेम की भेंट चढ़ गये,? क्या देश की वर्तमान पीढी के बीच में वीर सावरकर के संघर्ष और बलिदान को नये सिरे से नहीं रखा जाना चाहिए? सही तो यह है कि वीर सावरकर परसंप्रभुत्ता की राजनीति करने वाले दलो और आयातित संस्कृति के जेहादियों की साजिश के शिकार हो गये। कांग्रेस, वामपंथी जमात और पिछड़ी राजनीति के खलनायक अगर वीर सावरकर के योगदानों को स्वीकार कर उन्हें अतुलनीय नायक मान लेंगे तो फिर उनकी मुस्लिम वोट की सौदागरी हवा–हवाई हो जायेगी, फिर इनके सत्ता तक पहुंचने के मुस्लिम प्यार का क्या होगा?

स्वतंत्र इतिहास लेखन होता, स्वतंत्र मूल्यांकन होता, हमारी सत्ता राजनीति निष्पक्ष होती, सत्ता राजनीति पर परसप्रभुत्ता और आयातित संस्कृति प्रेम हावी नहीं होता तो निश्चित तौर पर गांधी, भगत सिंह, सुभाषचन्द्र बोस जैसी ही उन्हें भी इतिहास में जगह मिलती। जितनी यातनाएं वीर सावरकर ने झेली है, उतनी यातनाएं आजादी के आंदोलन में शायद ही किसी स्वतंत्रता सेनानी ने झेली होगी। तथ्य यह भी है कि अंग्रेजों के खिलाफ बगावत और अंग्रेजी शासन को चुनौती देने वाले कार्यक्रमों की एक लंबी फेहरिस्त है। 1904 से लेकर 1966 तक उन्होंने अपराजित योद्धा की तरह अपने आप को सक्रिय रखा था। 1904 में वे कानून पढ़ने लंदन गये थे। पर लंदन जाने के पूर्व उनके अंदर में देश की आजादी के अंकुर फूट चुके थे। उन्हें यह बर्दाश्त नहीं था कि वे लंदन में एक परतंत्र देश के नागरिक के तौर पर दंश झेलते रहे। उन्होने कानून की पढ़ाई को सिर्फ प्रतिकात्मक बनाया, जीवन का असली मकसद तो देश को आजाद कराना ही था। उन्होंने अभिनव भारत नाम की एक सस्था बनायी थी। बंग भंग आंदोलन के दौरान अंग्रेजों की आर्थिक ताकत तोड़ने के लिए विदेशी वस्त्रों की होली जलायी थी। ब्रिटेन में भारतियों को एकता के सूत्र में बांध कर उनमें आजादी की लौ जलायी थी। मदन लाल धीगंरा जैसे वीर और बलिदानी देशभक्त तैयार किये थे, जिन्होंने कातिल अंग्रेज अफसर की हत्या कर ब्रिटेन के उपनिवेशवाद को दुनिया भर में नंगा कर दिया था। अंग्रेजों को वीर सावरकर की यह बलिदानी गाथा, अदम्य साहस और अतुलनीय संघर्ष कैसे बर्दाश्त हो सकता था? उनकी पहली गिरफ्तारी ब्रिटेन में हुई पर वे अदम्य साहस दिखाते हुए अंग्रेजों के चंगुल से भाग निकले। दुर्भाग्यवश फ्रांस की समुद्री सीमा के अंदर उनकी अनाधिकार गिरफ्तारी हुई। ब्रिटेन में हिंसा फैलाने की साजिश और महाराष्ट्र के नासिक जिले के कलेक्टर जैकसन की हत्या के खिलाफ इन्हें काले पानी की सजा हुई और इन्हें उत्पीड़न के लिए कुख्यात सेलुलर जेल भेज दिया गया। सेलुलर जेल की उत्पीड़न की कहानी दुनिया भर को ज्ञात है। यहां पर आजादी के दिवानों के साथ पशुवत व्यवहार होता था, स्वतंत्रता सेनानियों को कोल्हू में जोता जाता था, स्वतंत्रता सेनानियों को खाना भी नाम मात्र ही मिलता था। सेलुलर जेल में विरोध की सजा बेत और कोड़ों की पिटाई से मिलती थी। 1911 से लेकर 1921 तक वे सेलुलर जेल में अंग्रेजों की यातनाएं झेलते रहे।

वीर सावरकर के साथ कई विशेषताएं जुड़ी हुई थी। वे न केवल अतुलनीय स्वतंत्रता सेनानी थे, अदम्य साहस और अदम्य संघर्ष के पुरोधा थे बल्कि वे एक अच्छे इतिहासकार थे, अच्छे उपन्यासकार थे, अच्छे विचारक भी थे। उनकी लिखी हुई इतिहास की पुस्तकें, उपन्यास इस बात की गवाही देती है। उन्होंने ही 1857 की क्रांति को आजादी के आंदोलन का पहला संग्राम बताया था। उनकी पुस्तकों और विचारों को अंग्रेजों ने प्रतिबंधित करने के लिए कई कदम उठाये थे। 1921 मे सेलुलर जेल से रिहा होने के बाद इनका संघर्ष क्रियात्मकता व रचनात्मकता में बदल गया। वास्तव में वीर सावरकर अंग्रेजों से ज्यादा महात्मा गांधी, कांग्रेस और मुस्लिम लीग की विभाजनकारी नीतियों से परेशान थे। उन्हें यह लगा कि आततायी अंग्रेजों और मुस्लिम साम्राज्य से मुक्ति का जो संघर्ष उन्होंने शुरू किया था वह पूरा होने वाला नहीं है, क्योंकि कांग्रेस की तुष्टिकरण की नीति से अंखड भारत खंड–खंड हो जायेगा। उनकी यह सोच सही निकली। कांग्रेस की तुष्टिकरण की नीति का दुष्परिणाम यह निकला कि धीरे–धीरे मुस्लिम आबादी के बीच विखंडनकारी सोच उत्पन्न होने लगी। मुस्लिम आबादी की पार्टी मुस्लिम लीग अपने लिए अलग देश की मांग करने लगी। मशहूर शायर इकबाल ने दो देशों की थ्योरी दे दी थी और पाकिस्तान नामक अलग देश की परिकल्पना भी पेश कर दी थी। अंग्रेज भी विभाजन की नीति पर चल रहे थे। अंग्रेजों की नीति फूट डालों और शासन करो की थी। अंग्रेज यह चाहते थे कि भारत कभी भी एक सबल और आत्म निर्भर देश के रूप में दुनिया के सामने न आये। इसीलिए अंग्रजो ने पाकिस्तान नामक अलग देश के लिए मुस्लिम आबादी को भड़काया भी था। 1940 के पूर्व देश भर में जगह–जगह दंगे भी हुए थे, उन दंगों में मुस्लिम आबादी की आततायी सोच सामने आयी। फिर भी कांग्रेस दंगों में मुस्लिम आबादी की पक्षधर बनी रही थी।

वीर सावरकर का अखंड भारत का सपना टूट चुका था। हिन्दू राष्ट्र की उनकी परिकल्पना धाराशायी हो चुकी थी। यही कारण था कि वे आजादी के आंदोलन के अतिम दौर उदासीन बन चुके थे। उन्होंने हिन्दू संस्कृति के संरक्षण का बीड़ा उठाया। इसी दौरान उनकी भेंट राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघ चालक डा केशव बलिराम हेडगवार से हुई। जब दोनों महापुरूषों की भेंट हुई तब अखंड भारत के लिए नये सिरे से योजना बनी, संघर्ष की नयी संस्कृति खोजी गयी, कांग्रेस की तुष्टिकरण की नीति के खिलाफ देश भर में जागरूकता का नया दौर शुरू किया गया। दोनों महापुरूष एक–दूसरे के प्रेरणा केन्द्र बने रहे। 1937 में वीर सावरकर हिन्दू महासभा के अध्यक्ष बने। हिन्दू महासभा के अध्यक्ष के तौर पर वीर सावरकर ने हिन्दू का एकत्रीकरण और हिन्दुओं के सैनिकीकरण का सिद्धांत दिया था। सावरकर का मत था कि जिस प्रकार से मुस्लिम आततायियों का बर्चस्व बढ रहा है उसके मुकाबले के लिए हिन्दुओं का सैनिकीकरण जरूरी है। उन्होंने हिन्दुत्व को जागृत करने वाले कई ग्रंथ भी लिखे जो आज भी प्रांसगिक हैं।

सबसे बडी बात यह है वीर सावरकर हिन्दू धर्म में जातिवाद के खिलाफ थे। उन्होंने महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध मंदिर में दलित पूजारी की नियुक्ति करायी थी। वे कहते थे कि जातिवाद के कारण ही हिन्दू धर्म अब तक पराजित होता रहा है। उनकी यह सोच कालजयी थी। आज के समय में भी हिन्दू धर्म के अंदर जातिवाद एक बडी समस्या है और यह समस्या हिन्दू धर्म की जड़ें खोदती रही है। आज जरूरत इस बात की है कि देश की राष्ट्रवादी सरकार वीर सावरकर के अतुलनीय योगदानों पर इतिहास का लेखन करे ताकि नयी पीढ़ी के बीच वीर सावरकर के मूल संस्कृतिनिष्ठ विचारों का प्रसार किया जा सके।

बहरोड़, राजस्थान में आर्य युवक निर्माण शिविर सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 29 मई 2016, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् राजस्थान के तत्वावधान में 22 मई से चल रहा आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर स्वामी विवेकानन्द विद्यालय, भंगवाड़ी कलां, बहरोड़ में सम्पन्न हुआ। चित्र में–आर्य नेता प्रदीप आर्य (अलवर) का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, सत्यव्रत शास्त्री, प्रान्तीय अध्यक्ष रामकृष्ण शास्त्री, रामकुमार सिंह, सत्यपाल आर्य व धर्मपाल आर्य। द्वितीय चित्र–आर्य युवक व्यायाम प्रदर्शन करते हुए। आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, वेदप्रकाश आर्य, प्रणवीर आर्य, रोहतास आर्य (एडवोकेट), रामानन्द आर्य उपस्थित थे। श्री रामकृष्ण शास्त्री ने कुशल संचालन किया।

बागेश्वर उत्तराखण्ड में युवक शिविर व फरीदाबाद में कन्या शिविर प्रारम्भ

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के प्रधान श्री गोबिन्दसिंह भण्डारी के नेतृत्व में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के सहयोग से आर्य युवा शिविर सैनिक हाई स्कूल,बागेश्वर में आयोजित किया गया है,दिल्ली से शिक्षक अरूण आर्य,योगेन्द्र शास्त्री,प्रदीप आर्य शिक्षण प्रदान करने गये हैं। द्वितीय चित्र–केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् फरीदाबाद के तत्वावधान में आर्य कन्या शिविर आर्य कन्या सदन,सैक्टर–15,फरीदाबाद में श्री पी.के.मितल के नेतृत्व में चल रहा है,चित्र में जिला अध्यक्ष जितेन्द्रसिंह आर्य व श्री पी.के.मितल अतिथि को सम्मानित करते हुए।

केन्द्रीय मंत्री डा.हर्षवर्धन का अभिनन्दन व श्री पूनम सूरी को स्मारिका भेंट

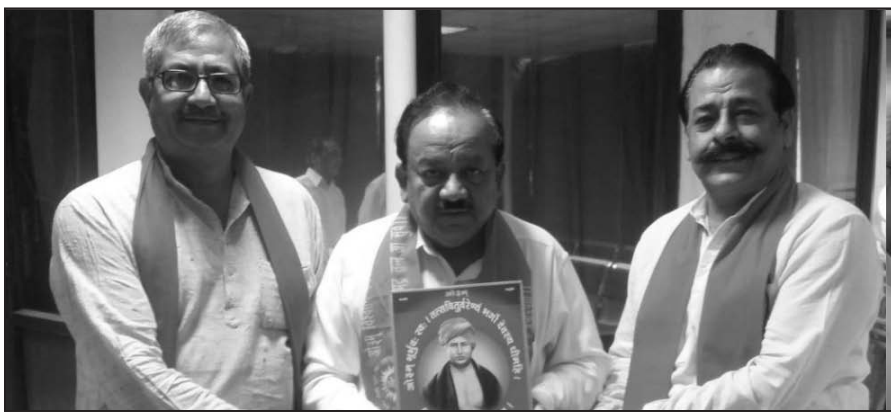

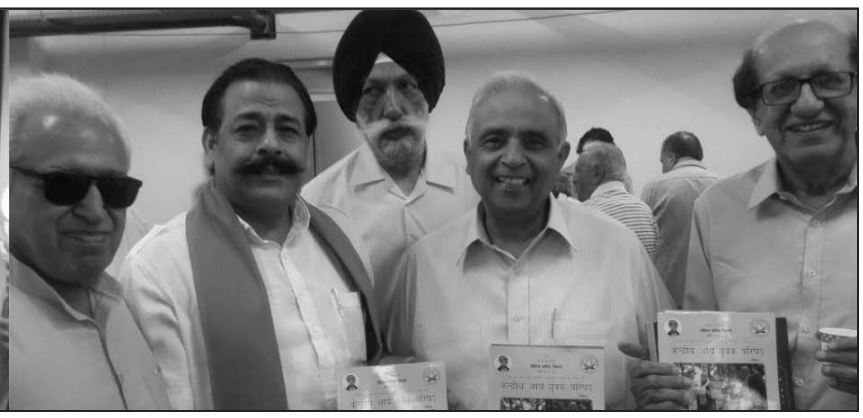

केन्द्रीय मन्त्री डा.हर्षवर्धन का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य व महेन्द्र भाई व द्वितीय चित्र में–डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री सभा नई दिल्ली के प्रधान श्री पूनम सूरी को परिषद् की स्मारिका भेंट करते डा.अनिल आर्य,साथ में श्री एच.आर.गन्धार व चन्द्रमोहन खन्ना।

॥ ओ३म् ॥

विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर

उद्घाटन समारोह

अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल जन्मोत्सव

शनिवार, 11 जून 2016, सायं 5 से 7:30 बजे तक

स्थान : ऐमिटी कैम्पस, सैक्टर–44, नोएडा

मुख्य अतिथि

न्यायमूर्ति श्री विनोद कुमार मिश्रा (इलाहाबाद हाई कोर्ट)

अध्यक्षता : **श्री आनन्द चौहान जी**
(निदेशक, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

ध्वजारोहण : **श्री मायाप्रकाश त्यागी जी**
(कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली)

मुख्य वक्ता : **स्वामी आर्यवेश जी**
(प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली)

विशिष्ट अतिथि : **डॉ. जयेन्द्र आचार्य** (आर्ष गुरुकुल नोएडा)
श्रीमती विमला बाथम (विधायक, नोएडा)
डॉ. वी.एस. चौहान (प्रकाश अस्पताल, नोएडा)

अभिनन्दन : **श्री दीनानाथ बत्रा** (संयोजक, शिक्षा बचाओ समिति)

गरिमामय उपस्थिति

• कै. रूद्रसेन सिन्धु	• श्री नवीन रहेजा	• श्री योगेश मुन्जाल
• श्री सुरेन्द्र कोहली	• चौ. ब्रह्मप्रकाश मान	• श्री रविदेव गुप्ता
• राव हरिशचन्द आर्य	• श्री अशोक जेठी	• श्री मुंशीराम सेठी
• डॉ. संजय महेन्द्रु	• प्रि. अन्जु महरोत्रा	• श्री संजीव सेठी
• श्री पुनीत मल्होत्रा	• श्री के.एल. वर्मा	• सुश्री सरोजनी दत्ता
• श्री श्रद्धानन्द शर्मा	• श्री ओमप्रकाश आर्य	• श्री सत्यवीर चौधरी
• श्री रामलुभाया महाजन	• डॉ. आर. के. आर्य	• श्री राकेश ग्रोवर
• श्रीमती रमेश कु. भारद्वाज	• डॉ. विनोद खेत्रपाल	• श्री रविन्द्र मेहता
• श्री जितेन्द्र नरूला	• श्री ओम सपरा	• लायन प्रमोद सपरा
• श्री तिलक चांदना	• श्री सुरेन्द्र शास्त्री	• श्री ओमप्रकाश जैन
• श्री ईशकुमार गक्खड़	• श्री अमरनाथ गोगिया	• श्रीमती पुष्पलता वर्मा
• श्री राजेश मेहन्दीरत्ता	• श्री वेदप्रकाश	• श्री सुरेन्द्र मानकटाला

मधुर भजन : आचार्य भानु प्रकाश शास्त्री (बरेली)

ऋषि लंगर : रात्री 7:30 से 8:30 बजे तक

॥ ओ३म् ॥

विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर

दीक्षा व भव्य समापन समारोह

रविवार, 19 जून 2016, प्रात: 11 से 1.30 बजे तक

स्थान : ऐमिटी कैम्पस, सैक्टर–44, नोएडा

मुख्य अतिथि

डॉ. सुब्रह्मण्यम् स्वामी (संसद सदस्य) **स्वामी सुमेधानन्द जी** (संसद सदस्य)

अध्यक्षता : **डॉ. अशोक कुमार चौहान जी**
(संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

आशीर्वाद : **डॉ. श्रीमती अमिता चौहान जी**
(चेयरपरसन, ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल्स)

ध्वजारोहण : **ठाकुर विक्रम सिंह जी** (राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्र निर्माण पार्टी)

विशिष्ट अतिथि : **श्री दर्शन अग्निहोत्री** (अध्यक्ष, वैदिक साधन आश्रम)
डॉ. लाजपतराय आर्य चौधरी (करनाल)
श्री राजीव कुमार परम (परम डेयरी ग्रुप)

गरिमामय उपस्थिति

• श्री अरूण बंसल	• श्री सत्यानन्द आर्य	• श्री प्रभात शेखर
• श्री के.एस. यादव	• श्री अविनाश बंसल	• श्री सुधीर सिंघल
• श्री प्रदीप तायल	• श्री प्रवीण तायल	• श्री रामकुमार भगत
• पं. रामगोपाल शर्मा	• श्री सुशील गुप्ता	• श्री चत्तरसिंह नागर
• श्री महेन्द्रसिंह आर्य	• श्री के.एल. पुरी	• श्री विजय आहूजा
• श्री धर्मपाल सिब्बल	• श्री राजेन्द्र लाम्बा	• श्रीमती नीता खन्ना
• श्री अशोक सिब्बल	• श्री सुनील अग्निहोत्री	• श्री पीतमकुमार गुप्ता
• श्रीमती सुनीता बुग्गा	• श्री टी. आर. मित्तल	• श्री मदनलाल आर्य
• श्री रवि चड्डा	• श्री धर्मदेव खुराना	• श्री यशपाल चावला
• श्री सहदेव नागिया	• श्री रामेश्वर गोयल	• श्री अशोक सरदाना
• श्री विकास अग्रवाल	• श्री नरेन्द्र कालरा	• श्री अजेय जिन्दल
• श्री आर.एस. तोमर	• श्री भारतभूषण साहनी	• श्री रमेश गाडी
• श्री रणसिंह राणा	• श्री कस्तूरीलाल मक्कड़	• श्री संजीव सिक्का
• श्री सुभाष चांदला	• डॉ. ओमप्रकाश मान	• श्री रामकृष्ण तनेजा
• श्रीमती विजयारानी शर्मा	• श्री राजेन्द्र खारी	• श्री जितेन्द्र डावर
• श्री जवाहर भाटिया	• श्री ओमप्रकाश अग्रवाल	• श्री महेन्द्र मनचन्दा

आर्य युवकों द्वारा भव्य व्यायाम प्रदर्शन के कार्यक्रम होंगे

ऋषि लंगर : दोपहर 1.30 से 2.30 बजे तक

केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् ने किया आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन

सुसंस्कृत नारी ही सुसंस्कृत परिवार व समाज का निर्माण कर सकती है-डा. अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्य वेश जी का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, उर्मिला आर्या, कृष्णचन्द पाहुजा, सुधा वर्मा, शीला ग्रोवर, एस. के.आहुजा, प्रवीन आर्या, सुरेश आर्य, ओम सपरा आदि। द्वितीय चित्र–विधायक वन्दना कुमारी का स्वागत करते प्रधान डा.धर्मवीर आर्य,मन्त्री ओमप्रकाश गुप्ता व डा.अनिल आर्य आदि।

विजेता कन्याओं का स्वागत करते विधायक वन्दना कुमारी,डा. सुषमा अरोड़ा, राजीव मुखी,डा. अनिल आर्य व द्वितीय चित्र–युवराज नागपाल का अभिनन्दन करते आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, डा.अनिल आर्य, बलराज नागपाल, धर्मपाल आर्य।

केन्द्रीय आर्य युवती परिषद्, दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में दिनांक 22 मई से 29 मई 2016 तक आठ दिवसीय ''आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर'' का आर्य समाज, विशाखा एनक्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली में भव्य आयोजन किया गया। शिविर में 130 बालिकाओं ने योगासन, लाठी, जूडो–कराटे, आत्म रक्षा शिक्षण, नैतिक शिक्षा, भाषण कला, नेतृत्व क्षमता, सन्ध्या यज्ञ, भजन, लेजियम, डम्बल आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि सुसंस्कृत नारी आज राष्ट्र की सबसे बड़ी आवश्यकता है, सुसंस्कृत नारी ही दो सुसंस्कृत परिवारों का निर्माण करेगी जिससे समाज का आधार भूत ढांचा ''भावी पीढ़ी'' मजबूत होगा। उन्होंने कन्या भ्रूण हत्या के विरूद्व भी सभी आर्य जनों से समाज में जनजागरण अभियान चलाने का आह्वान किया जिससे सामाजिक असन्तुलन पैदा न हो। उन्होंने कहा कि नारी ही समाज का आधार है ओर समाज को जोड़ने यानि खूंटी का काम करती है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आर्य वेश ने कहा कि महर्षि दयानन्द के विचारों पर चल कर ही विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है। आर्य समाज सदैव आपसी भाई चारे, सामाजिक समरसता, विश्व बन्धुत्व की भावना को विकसित करने पर बल देता रहा है। आज जातपात, प्रान्तवाद के नाम से जो देश को बांटने का जो कार्य किया जा रहा है वह देश की एकता, अखण्डता में बाधक है। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि नारी शक्ति को सबसे पहले महर्षि दयानन्द ने समाज में सर्वोच्च स्थान दिया और उनकी शिक्षा पर बल देते हुए वेदों का पढ़ने पढ़ाने का अधिकार प्रदान किया। आर्य समाज जातिवाद के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव की कड़ी निन्दा करता है।

आर्य विदुषी कृष्ण बाला, बलराज नागपाल, माता शीला ग्रोवर, युवराज नागपाल, समाजसेवी राजीव मुखी, प्रधान डा.धर्मवीर आर्य, संरक्षक सत्यप्रकाश आर्य, मन्त्री ओमप्रकाश गुप्ता, वेदप्रभा बरेजा, महेन्द्र भाई, कृष्णचन्द पाहुजा, राजीव आर्य, रामकुमारसिंह, धर्मपाल आर्य, ओम सपरा, सुरेश आर्य, एस.के.आहुजा, सुधा वर्मा आदि ने अपने विचार रखे। समाजसेवी डा.सुषमा अरोड़ा ने समारोह की अध्यक्षता की व ध्वजारोहण तृप्ता आहुजा ने किया। प्रदेश अध्यक्ष उर्मिला आर्या ने कुशल मंच संचालन किया। समापन समारोह में विधायक वन्दना कुमारी व आर्य तपस्वी सुखदेव जी ने अपना आशीर्वाद प्रदान किया। प्रमुख रूप से गिरीश जैन, रवि चड्डा, आदर्श सहगल, सतीश आर्य, सुशील घई, एस.पी.ड्डेजा, इन्दु आर्या, निर्मल जावा, अर्चना पुष्करना, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, अनिता कुमार, मनीषा ग्रोवर, ऋतु, प्रभा आर्या, अल्का अग्रवाल, चन्द्र डुडेजा, फूलवती जैलदार, वेदप्रकाश आर्य, देवदत आर्य, शिवम मिश्रा, आर.के. दुआ, अमिता सपरा, रजनीश कपूर, देवमित्र आर्य आदि उपस्थित थे। प्रीतिभोज का आनन्द लेकर सभी विदा हुए। सौरभ गुप्ता ने कुशल व्यवस्था सम्भाली।

माता कृष्णबाला का अभिनन्दन करते वेदप्रभा बरेजा,उर्मिला आर्या, अनिता कुमार, डा.सुषमा अरोड़ा, निर्मल जावा, इन्दु आर्या, ऋतु आदि। द्वितीय चित्र–समाजसेवी राजीव मुखी का अभिनन्दन करते डा. सुषमा अरोड़ा, आर्य तपस्वी सुखदेव जी व डा.अनिल आर्य।

शिक्षिका करूणा आर्या का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,सौरभ गुप्ता,उर्मिला आर्या,अनिता कुमार। द्वितीय चित्र–आर्य बालिकायें कराटे प्रदर्शन करती हुई।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970